http://www.developindiagroup.co.in/

बी.पी.एस.सी.

64वीं बिहार राज्य सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2018–19

पूर्णतः अद्यतन एवं संशोधित अध्ययन सामग्री

सामान्य अध्ययन

प्रश्नपत्र – 1

Prepared by
Develop India Group

आधुनिक भारत का इतिहास और भारतीय संस्कृति

आधुनिक भारत की पृष्ठभूमि

आधुनिक भारत की पृष्ठभूमि विषय को समझने के लिए निम्न आयामों को समझना चाहिए :

- यूरोपीय कम्पनियों के भारत आगमन के समय भारत तथा विश्व की परिस्थितियां
- यूरोपीय कम्पनियों का आगमन तथा अंग्रेजी प्रधानता की स्थापना/आंग्ल–यूरोपीय संघर्ष
- भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता की स्थापना/आंग्ल–भारतीय संघर्ष
- अंग्रेजी क्रियाकलाप (राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, सामाजिक व अन्य क्षेत्र में किए गए क्रियाकलाप)
- उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक का भारत

यूरोपीय कम्पनियों के भारत आगमन के समय भारत तथा विश्व की परिस्थितियां : भारत में यूरोपीय, व्यापारिक कम्पनियों का आगमन 15वीं से 17वीं शताब्दी के दौरान हुआ था। इस दौरान भारत में दो प्रमुख साम्राज्यों का राजनैतिक शासन रहा था, ये थे – दिल्ली सल्तनत (1206 ई. से 1526 ई.) तथा मुगल साम्राज्य (1526 से 1707 ई.)। 1707 ई. से 1857 ई. अर्थात् उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक दिल्ली पर मुगल वंश के कमजोर उत्तराधिकारियों का शासन रहा था। इन्हें उत्तर मुगल शासक कहा जाता है। इन उत्तर मुगल वंशी शासकों का नाममात्र का शासन था क्योंकि इस काल (1707–1857) के दौरान क्षेत्रीय स्तर पर अनेकों क्षेत्रीय शक्तियों का उद्भव हो गया था, ये थे – बंगाल के नवाब, हैदराबाद के निजाम, मैसूर में हैदर अली व टीपू सुल्तान, दक्कन के मराठा तथा उनके विस्तारित क्षेत्रीय सिपहसलार (ग्वालियर के सिंधिया, इंदौर के होलकर, नागपुर के भोसले, बड़ौदा के गायकवाड़ तथा पूना में पेशवा) पंजाब के सिक्ख, अवध के नवाब, रूहेलखंड के बंगश पठान तथा उत्तर भारत के जाट इत्यादि। इस प्रकार यूरोपीय कम्पनियों के भारत आगमन के समय तो भारत में एक सुदृढ़ शासन तंत्र विद्यमान था किंतु धीरे–धीरे भारतीय राजनैतिक व्यवस्था अपनी कमियों के कारण कमजोर होता चला गया जिसका लाभ पश्चिमी व्यापारिक कम्पनियों ने उठाना शुरू कर दिया।

वैश्विक स्तर पर भी इस दौरान अनेकों क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे थे। एक तरफ यूरोप में मध्यकालीन शोषणपरक राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक व्यवस्था में परिवर्तन हो रहा था, वहीं दूसरी तरफ एशिया में इस्लामिक राजनैतिक सत्ता का प्रभावशाली उदय हो रहा था। यूरोपीय पुनर्जागरण तथा एशियाई परिवर्तनों ने ऐसी परिस्थितियों को जन्म दिया कि यूरोपीय व्यापारिक समुदाय भारत की ओर अग्रसर होते चले गए। पश्चिमी एशिया में कुस्तुनतुनिया साम्राज्य के पतन तथा इस्लामी प्रभाव के बढ़ जाने के कारण यूरोप को पारम्परिक व्यापारिक मार्गों से प्राप्त होने वाले उत्पाद मिलने कम होने लगे। इसमें मसाला जैसे महत्त्वपूर्ण उत्पादों के न मिलने के कारण यूरोपीय जगत प्रभावित होने लगा। पुनर्जागरण के दौरान तथा बाद के समय में यूरोप ने वैज्ञानिक व तकनीकी विकास कर अनेकों नवीन व क्रांतिकारी कार्य किए थे। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण कार्य था समुद्र में दूर तक की यात्रा करने की योग्यता का विकास कर लेना। इस योग्यता का लाभ लेकर यूरोप वासियों ने अनेक नवीन भौगोलिक मार्गों तथा स्थलों की खोज की थी। इसी दौरान अमेरिका की खोज के साथ–साथ अफ्रीका के समुद्री तटों से होते हुए भारत तक पहुंचने का समुद्री मार्ग भी खोजा गया था। इसी समुद्री मार्ग का प्रयोग कर यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियां भारत पहुंची थीं।

यूरोपीय कम्पनियों का आगमन तथा अंग्रेजी प्रधानता की स्थापना/आंग्ल–यूरोपीय संघर्ष : आधुनिक भारत में आने वाली व्यापारिक कम्पनियों में पुर्तगाली, डच (हॉलैंड

Develop India Group

वासी), अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी कम्पनियां प्रमुख थीं। इनमें सर्वप्रथम 1498 ई. में पुर्तगाली भारत आए थे जो लगभग एक शताब्दी से अधिक समय तक बिना किसी यूरोपीय प्रतिद्वंदिता के कार्य करते रहे। इनके बाद 1605 ई. में डच व्यापारी भारत आए थे। इनके बाद 1608 ई. में अंग्रेज भारत आए थे। इनके बाद 1667 ई. में फ्रांसीसी भारत आए थे। इस प्रकार क्रमशः पुर्तगाली, डच, अंग्रेज व फ्रांसीसी भारत आए तथा अपने–अपने आर्थिक हितों की पूर्ति करने लगें। ये सामान्यतः व्यापार–वाणिज्य के माध्यम से आर्थिक लाभ प्राप्त करते थे। इनमें पुर्तगाली तथा अंग्रेजों ने भारत की सांस्कृतिक विशिष्टता से भी छेड़छाड़ की कोशिश की थी।

सामान्यतः सभी कम्पनियां अधिक से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करना चाहती थीं। इसलिए यदाकदा वे आपस में संघर्ष भी करने लगी थीं। ये संघर्ष भारत की सीमा में तथा भारत के बाहर भी की जाती थी। इन संघर्षों की अंतिम परिणति मात्र अंग्रेजों को लाभ देने में सफल रही थी। सर्वप्रथम पुर्तगाली व अंग्रेजों के बीच एक निर्णायक घटनाक्रम सम्पन्न हुआ। 1630 ई. की *'मैड्रिड की संधि'* से अंग्रेजों और पुर्तगालियों के बीच संघर्ष को प्राप्त करने का निर्णय लिया गया था। 1634 ई. में भारत में अंग्रेज व पुर्तगाली उच्चाधिकारियों ने मिलकर *'सूरत–गोवा समझौता'* किया था। इसके परिणामस्वरूप दोनों पक्षों के बीच में व्यापारिक सहयोग व सुरक्षा की भावना विकसित हुई थी। 1642 ई. में पुर्तगाल के शासक जॉन चतुर्थ तथा इंग्लैंड के राजा चार्ल्स प्रथम ने *'सूरत–गोवा समझौते'* की पुष्टि करते हुए दोनों देशों के बीच स्वतंत्र व्यापार हेतु एक संधि की थी। 1661 ई. में इंग्लैंड के राजा चार्ल्स प्प का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ होने के बाद अंग्रेज–पुर्तगाली सम्बंध नई दिशा को प्राप्त हो गए थे। इन सभी घटनाओं के उपरांत पुर्तगाली सक्रियता भारत से कम होने लगी थी। इसी दौरान पुर्तगाली अपना ध्यान भारत के स्थान पर दक्षिण अफ्रीका व दक्षिण अमेरिका की ओर लगाने लगे थे। इसके उपरांत भारत में पुर्तगाली सक्रियता पूर्व की तुलना में लगभग न के बराबर रह गई।

भारत में अंग्रेजों ने जिस दूसरी शक्ति को भारतीय प्रतिद्वंदिता से बाहर किया था वह डच थी। अंग्रेजों ने भारत तथा भारत के बाहर भी इनसे संघर्ष किया था। निर्णायक रूप से 1759 ई. के *'बेदरा के युद्ध'* के बाद अंग्रेजों व डचों के बीच एक समझौता हुआ था, जिसके अनुसार अंग्रेज दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से हट जाएंगे जबकि डच भारत को छोड़ देंगे। डचों के इस पराजय ने भारत से उनकी शक्ति समाप्त कर दी थी।

भारत में अंग्रेजों को जिस यूरोपीय कम्पनी ने कड़ा संघर्ष दिया था, वह फ्रांसीसी कम्पनी थी। इस संघर्ष को भारतीय इतिहास में *'कर्नाटक के युद्ध'* तथा *'आंग्ल–फ्रांसीसी'* संघर्ष के नाम से जाना जाता है। 1746 ई. से 1760 ई. तक तीन प्रमुख चरणों में यह संघर्ष चला था। इसे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय कर्नाटक युद्ध अथवा आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष कहते हैं। 1760 ई. के वांडीवाश के निर्णायक युद्ध तथा 1763 ई. के पेरिस की संधि के उपरांत यह स्थापित हो गया कि फ्रांसीसी अब मात्र व्यापार–वाणिज्य तो कर सकेंगे, किंतु अंग्रेजों को किसी भी प्रकार से राजनैतिक व सामरिक प्रतिद्वंदिता न दे सकेंगे।

इस प्रकार 1763 ई. तक आते–आते अंग्रेजों ने सभी यूरोपीय शक्तियों को कूटनीतिक तथा सामरिक प्रयासों के माध्यम से भारतीय प्रतिद्वंदिता से बाहर कर दिया था। इस दौरान अंग्रेजों ने भारतीय शक्तियों से भी संघर्ष करना प्रारम्भ कर दिया था। अंग्रेजों ने आर्थिक लाभ की प्राप्ति के लिए स्वमहाद्वीपीय शक्तियों के बीच न सिर्फ अपनी प्रधानता की स्थापना की अपितु क्षेत्रीय भारतीय शक्तियों से संघर्ष करते हुए अंततः वे भारत में अपनी प्रभुसत्ता की स्थापना भी करते चले गए थे।

भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता की स्थापना/आंग्ल–भारतीय संघर्ष : भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता की स्थापना बड़े ही नाटकीय ढंग से हुई थी। प्रारम्भ में अंग्रेजों ने व्यापार–वाणिज्य करने के दौरान अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए भारतीय सत्ताधारियों से अनेकों विशेषाधिकार प्राप्त किए

Develop India Group